विचार बिन्दु

छोटी चीजों के बारे में हमेशा वफादार रहिये क्योंकि इन्ही में आपकी शक्ति निहित होती है। –मदर टेरेसा

वनों की प्रतिरोधक क्षमता के लिए प्राकृतिक जलवायु समाधान अपरिहार्य है

वन प्रतिरोधक क्षमता का तात्पर्य है कि वन किस हद तक प्राकृतिक आपदाओं, जलवायु परिवर्तन और मानव गतिविधियों के प्रभावों से उबर सकते हैं। यह क्षमता उन वनों को परिभाषित करती है जो संकटों का सामना कर पुनः अपनी पारिस्थितिकीय स्थिति को बनाए रखते हैं। प्रतिरोधक क्षमता का आकलन करने के लिए विभिन्न मानदंडों का उपयोग किया जाता है जैसे जैव विविधता, वनस्पति संरचना और पारिस्थितिकी तंत्र सेवाएं। प्रतिरोधक क्षमता वाले उष्णकटिबंधीय वन वे हैं जो प्राकृतिक आपदाओं जैसे तूफान, सूखा, आग आदि के बाद भी तेजी से पुनः स्थिर हो जाते हैं। इसके उदाहरण के रूप में अमेज़न वर्षावन को देखा जा सकता है जो कई दशकों से कई प्रकार के संकटों का सामना करते हुए भी अपने जैव विविधता को बनाए रखने में सक्षम रहे हैं। इन वनों की पहचान करने के लिए वैज्ञानिक विभिन्न संकेतकों का उपयोग करते हैं जैसे वनस्पति का घनत्व, प्रजातियों की विविधता और पारिस्थितिकी तंत्र की कार्यक्षमता।

वन प्रतिरोधक क्षमता का महत्व कई कारणों से है। सबसे पहले, यह वन संरक्षण में सहायक होती है। प्रतिरोधक वनों का संरक्षण करने से अन्य वनों की तुलना में इनकी जैव विविधता और पारिस्थितिकी तंत्र सेवाओं को बनाए रखना आसान होता है। वन बहाली में भी यह महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, क्योंकि प्रतिरोधक वनों को बहाल करने के लिए कम संसाधनों की आवश्यकता होती है और यह तेजी से पुनः स्थिर हो जाते हैं। प्रतिरोधक वनों का महत्व कई पारिस्थितिकी तंत्र सेवाओं के लिए भी होता है। ये वन जल चक्र को संतुलित रखते हैं, मिट्टी के क्षरण को रोकते हैं और स्थानीय जलवायु को नियंत्रित करते हैं। इसके साथ ही, प्रतिरोधक वनों में फूलों और जीवों की विविधता अधिक होती है, जिससे जैव विविधता को संरक्षित करने में मदद मिलती है। कार्बन अवशोषण में भी प्रतिरोधक वनों की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। ये वन अधिक कार्बन को अवशोषित कर वायुमंडल में कार्बन डाइऑक्साइड की मात्रा को कम करते हैं, जिससे जलवायु परिवर्तन को नियंत्रित करने में सहायता मिलती है। इस प्रकार, प्रतिरोधक वनों का संरक्षण और बहाली जलवायु समाधान के रूप में महत्वपूर्ण है।

स्थिरता की दृष्टि से भी प्रतिरोधक वन महत्वपूर्ण होते हैं। ये वन न केवल पर्यावरण को संरक्षित करते हैं बल्कि स्थानीय समुदायों की आजीविका को भी समर्थन प्रदान करते हैं। उदाहरण के लिए, दक्षिण–पूर्व एशिया के वन स्थानीय समुदायों को खाद्य, जल और औषधीय पौधों की आपूर्ति करते हैं। इसके अलावा, पर्यटन के माध्यम से भी स्थानीय अर्थव्यवस्था को बढ़ावा मिलता है। उष्णकटिबंधीय वनों की प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाने के कई तरीके हैं। सबसे पहले, जैव विविधता को बनाए रखना आवश्यक है। विभिन्न प्रजातियों की उपस्थिति वन को विभिन्न संकटों से उबरने में सक्षम बनाती है। दूसरा तरीका है वनस्पति संरचना को बनाए रखना, जिससे वन की स्थिरता बढ़ती है। स्थानीय समुदायों की भागीदारी भी महत्वपूर्ण होती है। वे वन संरक्षण और बहाली में सक्रिय भूमिका निभा सकते हैं।

वनों और वनों की प्रतिरोधक क्षमता को बचाना एक प्राकृतिक जलवायु समाधान है। ये वन जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को कम करने, जैव विविधता को बनाए रखने और पारिस्थितिकी तंत्र सेवाओं को बनाए रखने में मदद करते हैं। इसके अलावा, ये स्थानीय समुदायों की आजीविका को भी समर्थन प्रदान करते हैं। इसलिए, इन वनों का संरक्षण और बहाली अत्यंत महत्वपूर्ण है। उष्णकटिबंधीय वनों की प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाने के लिए सामूहिक प्रयासों की आवश्यकता है। वैज्ञानिकों, स्थानीय समुदायों और सरकारों को मिलकर काम करना होगा। वन संरक्षण और बहाली के लिए नीतियों का निर्माण और उनका कार्यान्वयन आवश्यक है। इसके साथ ही, पर्यावरण शिक्षा और जागरूकता भी महत्वपूर्ण है, जिससे लोग वनों के महत्व को समझ सकें और उनके संरक्षण में भाग ले सकें। इस प्रकार, हम एक स्थायी और संतुलित पर्यावरण की ओर बढ़ सकते हैं, जिसमें वनों का महत्वपूर्ण योगदान रहेगा।

वन प्रतिरोधक क्षमता, जिसे पारिस्थितिक प्रतिरोधक क्षमता के रूप में भी समझा जाता है, वन पारिस्थितिक तंत्र की एक महत्वपूर्ण विशेषता है। यह वन पारिस्थितिकी तंत्र की उस क्षमता को दर्शाती है जो उसे प्राकृतिक और मानवजनित खतरों से उबरने में सक्षम बनाती है। जैसा कि पहले कहा गया है, इसमें तूफान, सूखा, आग, कीट संक्रमण और जलवायु परिवर्तन शामिल हैं। प्रतिरोधक क्षमता के बिना, वन पारिस्थितिकी तंत्र इन खतरों के सामने अस्थिर हो सकते हैं और अपनी पारिस्थितिकीय कार्यक्षमताओं को खो सकते हैं। उदाहरण के लिए, अमेज़न के वर्षावन जो कि विश्व के सबसे बड़े उष्णकटिबंधीय वनों में से एक है,ने कई प्राकृतिक और मानवजनित खतरों का सामना किया है। इसके बावजूद, अपनी जैव विविधता को संरक्षित रखा है और यही इसकी उच्च प्रतिरोधक क्षमता का संकेत है।

वनों और वनों की प्रतिरोधक क्षमता को बचाना एक प्राकृतिक जलवायु समाधान है। ये वन जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को कम करने, जैव विविधता को बनाए रखने और पारिस्थितिकी तंत्र सेवाओं को बनाए रखने में मदद करते हैं। इसके अलावा, ये स्थानीय समुदायों की आजीविका को भी समर्थन प्रदान करते हैं। इसलिए, इन वनों का संरक्षण और बहाली अत्यंत महत्वपूर्ण है।

प्रतिरोधक क्षमता का आकलन करने के लिए विभिन्न वैज्ञानिक मानदंडों का उपयोग किया जाता है। इनमें जैव विविधता, वनस्पति संरचना, और पारिस्थितिकी तंत्र सेवाएं शामिल हैं। जैव विविधता प्रतिरोधक क्षमता का एक महत्वपूर्ण संकेतक है क्योंकि विविध प्रजातियों की उपस्थिति वन को विभिन्न संकटों से उबरने में सक्षम बनाती है। वनस्पति संरचना भी महत्वपूर्ण है क्योंकि एक सुसंगठित वन संरचना पारिस्थितिकी तंत्र की स्थिरता और कार्यक्षमता को बनाए रखने में मदद करती है। उदाहरण के लिए, एक अध्ययन ने दिखाया कि उच्च जैव विविधता वाले वन सूखा के प्रभावों से तेजी से उबरते हैं।

प्रतिरोधक वनों का संरक्षण वन पारिस्थितिकी तंत्र के स्थायित्व को बनाए रखने के लिए महत्वपूर्ण है। यह संरक्षण न केवल जैव विविधता को बनाए रखता है बल्कि पारिस्थितिकी तंत्र सेवाओं को भी बनाए रखता है जो मानव जीवन के लिए आवश्यक हैं। वन बहाली के संदर्भ में, प्रतिरोधक वनों को बहाल करने के लिए कम संसाधनों की आवश्यकता होती है और ये तेजी से पुनः स्थिर हो जाते हैं। यह विशेष रूप से महत्वपूर्ण है जब हम जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को कम करने की बात करते हैं। एक उदाहरण के रूप में, मध्य अमेरिका के कुछ क्षेत्रों में वन बहाली परियोजनाओं ने दिखाया है कि उच्च प्रतिरोधकता वाले वन तेजी से पुनः स्थिर हो जाते हैं और अधिक कार्बन का अवशोषण करते हैं।

कार्बन अवशोषण की दृष्टि से, प्रतिरोधक वन जलवायु परिवर्तन के खिलाफ लड़ाई में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। ये वन अधिक मात्रा में कार्बन को अवशोषित करते हैं और इसे दीर्घकालिक रूप से संठाहीत करते हैं। यह कार्बन अवशोषण प्रक्रिया वायुमंडल में कार्बन डाइऑक्साइड की मात्रा को कम करने में मदद करती है, जिससे ग्रीनहाउस गैसों का प्रभाव कम होता है। एक अध्ययन के अनुसार, उष्णकटिबंधीय वनों में कार्बन संग्रहण की क्षमता उच्च होती है, विशेषकर जब वे उच्च जैव विविधता वाले होते हैं। इस प्रकार, प्रतिरोधक वनों का संरक्षण और बहाली जलवायु परिवर्तन को कम करने में एक महत्वपूर्ण रणनीति है।

स्थानीय समुदायों की आजीविका के संदर्भ में भी प्रतिरोधक वनों का महत्व अनदेखा नहीं किया जा सकता है। ये वन स्थानीय समुदायों को खाद्य, जल, और औषधीय पौधों की आपूर्ति करते हैं। उदाहरण के लिए, दक्षिण–पूर्व एशिया के वनों में रहने वाले समुदाय अपनी आजीविका के लिए वनों पर निर्भर होते हैं। इसके अलावा, पर्यटन भी इन वनों से जुड़ा हुआ है, जो स्थानीय अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देता है। प्रतिरोधक वनों का संरक्षण स्थानीय समुदायों को स्थायी आर्थिक लाभ प्रदान कर सकता है।

उष्णकटिबंधीय वनों की प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाने के कई तरीके हैं। सबसे पहले, जैव विविधता को बनाए रखना अत्यंत आवश्यक है। विभिन्न प्रजातियों की उपस्थिति वन को विभिन्न संकटों से उबरने में सक्षम बनाती है। दूसरा तरीका है वनस्पति संरचना को बनाए रखना, जिससे वन की स्थिरता बढ़ती है। तीसरा तरीका है स्थानीय समुदायों की भागीदारी को बढ़ावा देना। स्थानीय समुदाय वन संरक्षण और बहाली में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। इसके लिए शिक्षा और जागरूकता कार्यक्रम चलाना महत्वपूर्ण है ताकि लोग वनों के महत्व को समझ सकें और उनके संरक्षण में सक्रिय भाग ले सकें।

अंत में, उष्णकटिबंधीय वनों की प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाने के लिए सामूहिक प्रयासों की आवश्यकता है। वैज्ञानिकों, स्थानीय समुदायों और सरकारों को मिलकर काम करना होगा। वन संरक्षण और बहाली के लिए नीतियों का निर्माण और उनका कार्यान्वयन आवश्यक है। इसके साथ ही, पर्यावरण शिक्षा और जागरूकता भी महत्वपूर्ण है, जिससे लोग वनों के महत्व कोसमझ सकें और उनके संरक्षण में भाग ले सकें। इस प्रकार, हम एक स्थायी और संतुलित पर्यावरण की ओर बढ़ सकते हैं, जिसमें वनों का महत्वपूर्ण योगदान रहेगा।

वन प्रतिरोधक क्षमता एक महत्वपूर्ण अवधारणा है जो वन पारिस्थितिक तंत्र की दीर्घकालिक स्थिरता और स्वास्थ्य के लिए आवश्यक है। प्रतिरोधक क्षमता का महत्व न केवल पर्यावरणीय दृष्टिकोण से बल्कि आर्थिक और सामाजिक दृष्टिकोण से भी है। जैव विविधता, वनस्पति संरचना और पारिस्थितिकी तंत्र सेवाएं प्रतिरोधक क्षमता के मुख्य घटक हैं। उष्णकटिबंधीय वनों का संरक्षण और बहाली जलवायु परिवर्तन को कम करने, जैव विविधता को बनाए रखने और स्थानीय समुदायों की आजीविका को समर्थन प्रदान करने में महत्वपूर्ण है। सामूहिक प्रयासों और नीतियों के माध्यम से हम उष्णकटिबंधीय वनों की प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ा सकते हैं और एक स्थायी भविष्य की दिशा में आगे बढ़ सकते हैं।

वन प्रतिरोधक क्षमता उष्णकटिबंधीय वन पारिस्थितिक तंत्र में विनाशकारी परिवर्तनों से बचाव कर सकती है। परिवर्तन सामान्य है, लेकिन यह अचानक और कठोर विपरीत स्थिति में परिवर्तित हो सकता है। हालांकि विभिन्न घटनाएँ ऐसे परिवर्तनों को उत्प्रेरित कर सकती हैं, अध्ययन बताते हैं कि प्रतिरोधक क्षमता की हानि आमतौर पर वैकल्पिक स्थिति की ओर ले जाती है। इसका मतलब है कि ऐसे पारिस्थितिक तंत्रों के सतत प्रबंधन की रणनीतियों को प्रतिरोधक क्षमता बनाए रखने पर केंद्रित होना चाहिए। प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ावा देना न केवल पारिस्थितिकी तंत्र की स्थिरता और जैव विविधता को बनाए रखेगा, बल्कि जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को कम करने और स्थानीय समुदायों की आजीविका को सुरक्षित रखने में भी मदद करेगा।

–अतिथि सम्पादक,
डॉ. दीप नारायण पाण्डेय
(भारतीय वन सेवा से सेवानिवृत्त तथा वर्तमान में राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान में विजिटिंग प्रोफेसर)
(यह लेखक के निजी विचार हैं और 'सार्वभौमिक कल्याण के सिद्धांत' से प्रेरित हैं)

सीसारमा नदी साढ़े चार फीट चली, पिछोला में पानी की आवक शुरू हुई

उदयपुर जिले में अतिभारी बारिश के अलर्ट के बीच अलसीगढ़ से ओगणा तक बारिश जारी

- **लेकसिटी में दिनभर उमस के बाद बारिश, पिछोला अभी 5 फीट 10 इंच खाली**
- **उदयपुर जिले में सर्वाधिक बारिश ओगणा में करीब दो इंच रिकॉर्ड की गई**

उदयपुर, (कासं)। लेकसिटी में शनिवार का दिन अलर्ट के बावजूद भारी उमस के बीच बीता, लेकिन दोपहर बाद घने काले बादलों के साथ बरसात का दौर शुरू हुआ जो देर शाम तक जारी रहा। इधर, जिले में अतिभारी बारिश के अलर्ट बीच जिले के केचमेंट एरिया अलसीगढ़ से ओगणा तक लगातार बारिश हो रही है। अच्छी बारिश के चलते इस क्षेत्र में स्थित सीसारमा नदी शाम को तीन फीट और रात तक इसका वेग बढ़ कर साढ़े चार फीट पहुंच गया। सीसारमा नदी चलने से इस सीजन में पहली बार पिछोला झील में पानी की आवक शुरू हुई है।

उदयपुर शहर में शनिवार को दिन की शुरूआत तीखी धूप व उमस के साथ हुई। एक दिन हुई मूसलाधार बारिश का असर भी मौसम में बेअसर दिखाई दिया लेकिन दोपहर करीब 3.30 बजे अचानक मौसम बदल गया और काले घने बादलों से अंधेरा सा हो गया और बारिश शुरू हो गई। सहायक अभियंता जल संसाधन विभाग निर्मल मेघवाल ने बताया कि नदी–तालाबों में पानी की आवक बढ़ रही है। सीसारमा नदी का वेग शनिवार शाम तीन फीट था जो रात 7.30 बजे तक 4 फीट 4 इंच हो गया। वहीं शाम पांच बजे तक उदयपुर जिले में सर्वाधिक बारिश ओगणा में 45 मिमी (करीब दो इंच) रिकॉर्ड की गई। इसके अलावा उदयपुर शहर में पांच मिमी, नाई चार, अलसीगढ़ व झाड़ोल में 35 मिमी व डबोक उदयसागर क्षेत्र में 34.3 मिमी वर्षा रिकॉर्ड की गई है। तेज धूप व उमस ने शहर के तापमान को तीन डिग्री से अधिक बढ़ा दिया है। शुक्रवार को तापमान 28.2 डिग्री था जो बढ़कर 31.6 डिग्री पर जा पहुंचा।

बारिश के दो माह रीते बीतने के बाद आखिरी भादों ने झीलों के भरने की उम्मीदों को जिंदा रखा है। देखा जाएं तो उदयपुर शहर में जाता मानसून ही झीलों को भरता है और ऐसा ही कुछ दिखाई भी दे रहा है। शहर की सीसारमा नदी के चलने से प्रमुख झील पीछोला में आवक शुरू हो गई है हालांकि फतहसागर में मदार नहर से आवक शुरू होने में अभी वक्त लगेगा क्योंकि मदार बड़ा तालाब जिसके ओवरफ्लो होने पर मदार नहर चलती है वह अभी करीब सात फीट खाली है। पीछोला का जलस्तर 5 फीट 2 इंच बना है। यह अभी 5 फीट 10 इंच खाली है। इसकी क्षमता 11 फीट है।

उदयपुर जिले में केचमेंट एरिया में अच्छी बारिश के चलते बूझड़ा व सीसारमा नदी बहने लगी।

मेनार के पास नेशनल हाइवे पर तेंदुआ दिखा, ग्रामीणों में भय

कार की आवाज से लेपर्ड रास्ते से हटकर सड़क किनारे घास में बैठ गया

- **सूचना पर मौके पर पहुंची वन विभाग की टीम तेंदुए की तलाश में जुटी**

उदयपुर,(कासं)। उदयपुर–मंगलवाड़ नेशनल हाइवे के पास मेनार गांव के तालाब के पास शुक्रवार रात एक तेंदुआ दिखाई दिया। रास्ते से गुजर रही कार की आवाज से तेंदुआ सड़क किनारे घास में दुबक गया। ग्रामीणों ने लेपर्ड का वीडियो भी बनाया, जिसमें वह घास में बैठा दिखाई दे रहा है। आबादी क्षेत्र के पास लेपर्ड आने से लोगों में भय व्याप्त है।

ग्रामीण कालूलाल दौलावत के अनुसार बारिश होने की वजह से शुक्रवार रात वह अपने पिता राधाकृष्ण दौलावत को कुएं पर कार में छोड़ने जा रहा था। कुएं पर तालाब से शमशान के पास से जिस रास्ते से जाना था, उस रास्ते पर तेंदुआ को जाते देखा। कार की आवाज से लेपर्ड रास्ते से हटकर सड़क किनारे घास में दुबक कर बैठ गया। सुरक्षा की दृष्टि से कार के सभी ग्लास चढ़ा दिए। वापस लौटते हुए भी तेंदुआ उसी जगह पर दिखाई दिया। इस बीच वहां पर गांव के जगदीश कमावत, कालूलाल दौलावत, करण पुंडरोत सहित अन्य ग्रामीण आ गए। ग्रामीणों की भीड़ और शोर के बीच तेंदुआ हिरोला की छापर मेला ग्राउंड की ओर भाग गया। ग्रामीण भगवतीलाल दौलावत ने भींडर रेंज के क्षेत्रीय वन अधिकारी कैलाश मेनारिया को सूचना दी। वनरक्षक राजेंद्र सिंह सिसोदिया, वनपाल मांगीलाल डांगी, कना रावत मौके पर पहुंचे। उन्होंने मौके पर तेंदुए की तलाश की लेकिन दिखाई नहीं दिया। वनरक्षक सिसोदिया ने बताया कि मेनार में शुक्रवार सुबह से ही बारिश हो रही थी। इस कारण तेंदुए के पगमार्क नजर नहीं आए। ग्रामीणों ने तेंदुए का एक वीडियो भी बनाया, जो सामने आया है। वीडियो में तेंदुआ घास में बैठा दिखाई दिया है।

झाड़ियों में नवजात का शव मिला

कामां पुलिस मौके पर पहुंची और शव को कब्जे में लिया

कामां (निस)। मां की ममता को शर्मसार करने वाला मामला शनिवार को सुबह देखने को मिला जब गुड़गांव कैनाल नहर के समीप झाड़ियों में नवजात शिशु का शव मिला। जिसको देखकर हर किसी का दिल पसीज गया और हर कोई के दिल में एक बात आ रही कैसी मां होगी जो जन्म के तुरन्त पश्चात अपने बच्चे को जंगल में फेंक कर चली जाती है।

जानकारी के अनुसार डीग जिले के कामां थाने के अन्तर्गत आने वाले गांव बरसाना रोड गुड़गांव कैनाल नहर की झाड़ियों में एक बालिका का नवजात शव मिलने से सनसनी फेल गई। सूचना पर कामां पुलिस मौके पर पहुंची और नवजात शव को अपने कब्जे में लिया और शव को कामां अस्पताल की मोर्चरी में रखवा दिया। डॉक्टरों के अनुसार नवजात बालिका का शव हैं जो 24 घण्टे के अंतर्गत हुई डिलेवरी का बताया जा रहा है। कामा पुलिस क्षेत्र के आसपास में लगे सीसीटीबी फुटेज खंगाल रही हैं।

पुलिस प्रशासन नवजात शिशु की जानकारी जुटा रही है कि 24 घण्टे के अन्दर क्षेत्र में कितनी डिलेवरी हुई हैं, कस्बे में अवैध रूप से चल रहे गर्भपात केंद्रों में से किसी एक पर डिलीवरी होने की आशंका जताई जा रही है। पुलिस नवजात को जन्म देने वाली मां की तलाश कर रही है।

पूर्व क्रिकेटर संदीप पाटिल अलवर में एकेडमी खोलेंगे

- **संदीप पाटिल व दिनेश नानावटी अलवर के कॉलेज में प्रदेश के क्रिकेट कोच को ट्रेनिंग देने पहुंचे**

अलवर, (निसं)। 1983 क्रिकेट वर्ल्डकप का हिस्सा रहे पूर्व इंडियन क्रिकेटर संदीप पाटिल व दिनेश नानावटी शनिवार को अलवर के कॉलेज में प्रदेश के क्रिकेट कोच को ट्रेनिंग देने पहुंचे। यहां श्राची ग्रुप की ओर से क्रिकेट एकेडमी खोलने की तैयारी है। पाटिल के साथ कई अन्य क्रिकेटर भी आए। इस दौरान संदीप पाटिल ने बातचीत की।

पाटिल ने कहा कि क्रिकेट के कोच अच्छे होंगे तो खिलाड़ी भी बेहतर तैयार होंगे। इसलिए अलवर आए हैं। यहां अभी कोच को ओ लेवल की कोचिंग दी जा रही है। पाटिल के साथ एलआईटी के डायरेक्टर डॉ. राजेश भारद्वाज सहित कोच व अन्य प्रतिनिधि शामिल रहे। पूर्व क्रिकेटर दिनेश नानावटी व गौतम शोमी भी यहां पहुंचे हैं।

पाटिल ने कहा कि वे सांची ग्रुप व एथलीट स्पोर्ट्स की तरफ से यहां पहुंचे हैं। अभी यहां सांची ग्रुप के जरिए कोच का कैंप है। यहां उनको ट्रेनिंग दी जा रही है। हम सोचते हैं कि अच्छे कोच होंगे तो खिलाड़ी भी अच्छे तैयार होंगे। अभी ट्रेनिंग ले रहे कोच को यह बताया जा रहा है कि नए खिलाड़ियों को कैसे ट्रेनिंग दी जाए।

उनको तकनीकी जानकारी दी जाती है। पाटिल ने कहा कि कोच का सही होना जरूरी है। तभी अच्छे खिलाड़ी सामने आ सकते हैं। पहले तो बड़े शहरों तक क्रिकेट सीमित था लेकिन अब हर मोहल्ले में क्रिकेट है। इसका श्रेय बीसीसीआई को जाता है। उनकी तरफ से छोटी–छोटी जगहों पर कैंप व प्रोग्राम चलाए जाते हैं। अब सांची ग्रुप की कोशिश जारी है। अब अलवर तक सांची ग्रुप पहुंचा है। यहां कोच को ट्रेनिंग दी जाएगी।

सरकारी स्कूल की छत का प्लास्टर गिरा, शिक्षक और छात्रा घायल

हादसे के समय कमरे में कक्षा 8 वीं, 9 वीं और 11वीं की कक्षा संचालित थी

- **कमरे नहीं होने से तीनों कक्षाओं के विद्यार्थी एक ही कमरे में बैठे थे**

उदयपुर, (कासं)। जिले के कोटड़ा ब्लॉक में शनिवार को एक सरकारी विद्यालय की छत का प्लास्टर गिरने से एक शारीरिक शिक्षक और एक छात्रा को चोटें आई हैं।

मामला जिले के कोटड़ा उपखंड में स्थित खाम गांव में राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय का है। शनिवार को स्कूल के एक कमरे की छत का प्लास्टर टूटकर गिर पड़ा। उस समय उस एक कमरे में कक्षा 8वीं, 9 और 11वीं की कक्षा संचालित थी। कमरे नहीं होने से तीनों कक्षाओं के विद्यार्थी एक ही कमरे में बैठे थे। प्लास्तर गिरते ही बच्चे घबरा गए और भय से बाहर निकलकर भागे। कक्षा में मौजूद शारीरिक शिक्षक रामलाल गरासिया के सिर और पैर में चोट लगी तो कक्षा 9 की छात्रा दुर्गा कुमारी के पीठ पर प्लास्टर गिरा। दोनों को देवला के सरकारी अस्पताल में प्राथमिक उपचार के बाद घर भेज दिया।

ग्रामीणों का कहना है कि शुक्रवार की तेज बारिश के कारण शनिवार को स्कूल में छात्र–छात्राओं की उपस्थिति संख्या कम थी। आज उस एक कक्षा कक्ष में तीन कक्षाएं संचालित हो रही थी जिनमें 30 विद्यार्थी पढ़ रहे थे। आमतौर पर इन कक्षाओं के कुल 60 विद्यार्थी एक साथ बैठते हैं। उच्च माध्मिक स्तर के इस विद्यालय में कुल 6 कमरे ही है और उसमे भी बैठने लायक तीन कमरे ही हैं, वैसे सबकी हालत जर्जर है। इन कमरों में स्टूडेंट और टीचर अपनी जान जोखिम में डालकर पठन–पाठन रहे हैं। ग्रामीणों ने कहा कि यह तो अच्छा रहा कि कोई जनहानि नहीं हुई। ग्रामीणों ने जर्जर विद्यालय की शीघ्र मरम्मत करवाने की मांग की है।

राशिफल रविवार 25 अगस्त, 2024

पंडित अनिल शर्मा

भाद्रपद मास, कृष्ण पक्ष, सप्तमी तिथि, रविवार, विक्रम संवत 2081, भरणी नक्षत्र सांय 4:45 तक, ध्रुव योग रात्रि 12:49 तक, विष्टि करण दिन 4:35 तक, चन्द्रमा रात्रि 10:30 से वृष राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य–सिंह, चन्द्रमा–मेष, मंगल–वृष, बुध–सिंह, गुरू–वृष, शुक्र–कन्या, शनि–कुम्भ, राहु–मीन, केतु–कन्या राशि में।

आज राजयोग सूर्योदय से सांय 4:45 तक है। रवियोग सांय 4:45 तक रहेगा। त्रिपुष्कर योग सांय 4:45 से रात्रि 3:40 तक रहेगा। ज्वालामुखी योग रात्रि 3:40 से आरम्भ होगा। आज भद्रा सांय 4:35 तक है। अगस्त उदय सांय 5:42 पर होगा।

श्रेष्ठ चौघड़िया: चर 7:42 से 9:18 तक, लाभ–अमृत 9:18 से 12:27 तक, शुभ 2:01 से 3:35 तक।

राहूकाल: 4:30 से 6:00 तक। सूर्योदय 6:07, सूर्यास्त 6:51

मेष

मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मन:स्थिति ठीक रहेगी। आज आवश्यक कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे। आज रचनात्मक कार्यों में समय व्यतीत होगा।

वृष

आज मित्रों/रिश्तेदारों के कारण अनर्गल कार्यों में समय खराब हो सकता है। घर–गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि होगी। मन में असंतोष बना रहेगा। स्वभाव पर नियंत्रण रखें।

मिथुन

आर्थिक/वित्तिय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। आवश्यक कार्यों के कारण बाहर जाना पड़ सकता है। नये–पुराने मित्रों से मुलाकात हो सकती है।

कर्क

अपने अति आवश्यक और महत्वपूर्ण कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। आवश्यक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। नवीन कार्यों में उचित सफलता मिलेगी।

सिंह

नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। प्रतिष्ठित व्यक्तियों से मुलाकात होगी। धार्मिक स्थान की यात्रा का कार्यक्रम बन सकता है।

कन्या

चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान सामने आ सकते हैं। यात्रा में दुर्घटना का भय है। आवश्यक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी।

तुला

परिवार में आपसी सहयोग–समन्वय बना रहेगा। परिवार में मनोरंजन के कार्यक्रम बन सकते हैं। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा।

वृश्चिक

अपने अति आवश्यक और महत्वपूर्ण कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। आवश्यक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। नवीन कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा।

धनु

परिजनों के व्यवहार के कारण दु:ख हो सकता है। आवश्यक और महत्वपूर्ण कार्यों के संबंध में दुविधा बनी रहेगी। नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे।

मकर

घर–परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। घर–परिवार में शुभ–मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। शुभ कार्य के लिए यात्रा संभव है।

कुंभ

परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। मित्रों/रिश्तेदारों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। घर–परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा।

मीन

आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। महत्वपूर्ण कार्यों से संबंधित वार्ता सफल रहेगी। व्यक्तिगत प्रयासों से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है।